

'औरंगजेब की आखिरी रात' एकांकी में व्यक्त औरंगजेब का पश्चाताप**डॉ.बालाजी श्रीपती भुरे**

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

शिवजागृती वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगाँव

ता. चाकुर जि. लातूर (महाराष्ट्र)

हिं

दी साहित्य में चर्चित एवं मेधावी प्रतिभा के धनी

रामकुमार वर्मा का जन्म 15 सितंबर 1905 में और निधन 1990 में हुआ। 'औरंगजेब की आखिरी रात' इस एकांकी के रचनाकार रामकुमार वर्मा ने अपने साहित्यिक जीवन का आरंभ कविता से किया पर एकांकी लेखन का जो क्रम सन 1930 से चला वह जीवन तक नहीं टूटा। उन्होंने वास्तविकता को अपनी एकांकियों की आधारशिला बनाकर विविध घटनाओं को एक सुनिश्चित दिशा देने का महत्पूर्ण कार्य किया है। उन्होंने सामाजिक एकांकियों के साथ-साथ ऐतिहासिक एकांकी भी लिखे हैं। उनके ऐतिहासिक एकांकियों और नाटकों में इतिहास की पुनरावृत्ति नहीं दिखाई देती बल्कि उसे नए संदर्भ में उन्होंने अभिव्यक्त किया है। यथार्थवाद के नाम पर गंदे फूहड और वासनात्मक चित्र चित्रित करने में उनकी रुचि नहीं थी। उनके अधिकांश पात्र शिक्षित नागरिक हैं। अतः उनकी भाषा में नागरिकता की झलक हमें दिखाई देती है

वर्मा जी ने ऐतिहासिक इतिव्रत को अच्छी तरह से समझाकर उसे आत्मसात कर आज के मनोवैज्ञानिक धरातल पर उसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। परिणाम स्वरूप उनमें मानवीय अंतः संघर्ष अपनी सघनता और मनोवैज्ञानिकता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। वे 'रजतरश्मि' की भूमिका में लिखते हैं - "सभी नाटक ऐतिहासिक कथावस्तु से संबंध रखते हैं। इस दिशा में मुझे इतिहास के अध्ययन के साथ-साथ तत्कालीन सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की पूरी तैयारी भी करनी पड़ी है। इस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में पात्रों के चरित्र को मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित करने की दृष्टि रखी गई है। यह दृष्टि जहां एक बार विकसित हो गई, पात्रों का विकास भी अपने आप होने लगता है।"1 'औरंगजेब की आखिरी रात' इस एकांकी में यह कथन पूरी तरह से सच्चा साबित होता है।

रामकुमार वर्मा की चर्चित एकांकी संग्रहों में 'पृथ्वीराज की आंखें', 'चारुमित्र', 'विभूति', 'रजतरश्मि', 'रेशमी टाई', 'रूपरंग', 'सप्तकिरण', 'कौमुदी महोत्सव', 'रिमझिम' आदि चर्चित एकांकी संग्रह हैं। इनमें से रामकुमार वर्मा की 'औरंगजेब की आखिरी रात' एक चर्चित ऐतिहासिक एकांकी है।

'औरंगजेब की आखिरी रात' :-

एकांकी शीर्षक से ही स्पष्ट होता है कि यह एक अंक की ही है। ऐतिहासिक एकांकी में इतिहास के पात्र, किसी एक घटना या किसी एक स्थान को विश्लेषित किया जाता है। 'औरंगजेब की आखिरी रात' इस एकांकी में भी ऐतिहासिक पात्र मुगल सम्राट औरंगजेब, उसकी बेटी जीन्नत उन्निसा बेगम, हकीम, एक सिपाही ये पात्र लिए गए हैं और स्थान के रूप में अहमदनगर का किला लिया गया है। इतिहास की इसी घटना का विश्लेषण यहां किया गया है। इस ऐतिहासिक एकांकी में औरंगजेब के जीवन के अंतिम पड़ाव में उन्हें हो रहे पश्चाताप को व्यक्त किया गया है, जिसे हम एकांकी की दृष्टि से निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है। जैसे -

ऐतिहासिक कथावस्तु :-

यह एक ऐतिहासिक एकांकी है। इसमें औरंगजेब के आखिरी कुछ दिन तथा अंतिम समय का वर्णन किया गया है। इस एकांकी में इतिहास की घटना को लिया गया है। अहमदनगर का किला और 18 फरवरी 1907 की रात्रि के 3:00 बजे का समय और उसमें औरंगजेब की आखिरी रात का और उसी रात में उभरता हुआ उसका अतीत उसे किस प्रकार चैन नहीं लेने देता इसे अभिव्यक्त किया गया है। वह इस्लाम का सच्चा अनुयायी था पर उसके अनेक क्रियाकलाप उसके उसूलों के खिलाफ थे। उसकी अंतरात्मा उसको कोसती है कि इस्लाम के नाम पर उसने किस प्रकार दूसरों को धोखा दिया है। कितने बे गुनाहों का सर उन्होंने कलम किया, कितने मासूमों को दीवार में चुनवाया। यहां तक कि राजगद्दी

की लालसा के लिए अपनेही भाइयों का कत्ल करने में भी उन्होंने संकोच नहीं किया। यहां तक कि अपने पिता को कैदखाने में डाल दिया। अतः एकांकी के अंत में उसके पास केवल उसकी बेटी जीनत है। अपने अकेलेपन को वह महसूस कर रहा है और अपने किए पर उसके पश्चाताप को भी एकांकीकार ने यहां व्यक्त किया है।

मूलसंवेदना :-

रामकुमार वर्मा ने 'औरंगजेब की आखिरी रात' इस एकांकी के माध्यम से मानव जीवन के एक दुर्बल पक्ष को उद्घाटित किया है। मानव जीवन की सबसे बड़ी दुर्बलता उसकी महत्वाकांक्षा होती है। इसी महत्वाकांक्षा के वशीभूत होकर मनुष्य अपने जीवन को व्यर्थ बना देता है और अपने विकास के मार्ग को अवरुद्ध करता है। जैसे - इस एकांकी के नायक औरंगजेब को यही सत्ता की महत्वाकांक्षा क्रूर एवं शोषक औरंगजेब बनने के लिए विवश करती है। लेखक ने इस रचना के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि इस भौतिकता की अंधी दौड़ में संबंधों की टकराहट से उत्पन्न परिस्थितियों का निर्माण करते हुए मनुष्य को अपने अंत समय में एकाकीपन, शून्यता और निरर्थकता का बोध हो जाता है। इसीलिए मनुष्य को चाहिए कि जीवन में भौतिक संपन्नता को अत्याधिक महत्व न देकर मानवता, आपसी रिश्ते आदि को महत्व देना चाहिए जिससे हमें आखिर में पछताना न पड़े।

धार्मिक कट्टरता :-

इस एकांकी में एकांकीकार ने औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता को भी प्रस्तुत किया है। वह धर्मांध और कट्टर मुस्लिम था। उन्होंने अपनी साम्राज्य लिप्सा के लिए हिंदुओं पर जजिया कर लगाया था। उसने कई अत्याचार हिंदुओं पर किये। उसका अपनी बेटी जीनत उन्नीसा को यह कहना कि हम मराठों को परास्त कर पूरे मुल्क पर हमारी हुकूमत स्थापित करते लेकिन नहीं, जीनत ! "मराठों ने ऐसा नहीं होने दिया। हम कुरान पाक की कसम खाकर कहते हैं कि हम मराठों का नामोनिशान मिटाने में अपनी सारी सल्तनत की बाजी लगा देते, लेकिन... लेकिन अब वह हौसला नहीं रह गया। कमजोरी और बुढ़ापे ने हमें बेबस कर दिया। हमारे बहुत-से काम अधूरे पड़े हैं !"2 यह औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता को व्यक्त करता है।

सत्ता की लालसा :-

इस एकांकी में रामकुमार वर्मा ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि औरंगजेब ने जीवन भर अपने साम्राज्य की

एवं सत्ता की लालसा पूर्ति के लिए रक्त संबंधों को भी किस प्रकार खत्म करने का क्रूर कार्य किया है, जिससे मानवता चूर-चूर हो जाती है। औरंगजेब अपनी अंतिम सांसे गिन रहा है और साथ ही जीवन भर मजहब और सत्ता की लालसा के कारण उन्होंने जो अन्याय किए थे उसके लिए पछतावे की आंसू भी बहा रहा है। सत्ता की लालसा ही मनुष्य को पशुता तथा हैवानियत की ओर ले जाती है यह औरंगजेब की सत्ता लालसा से स्पष्ट हो जाता है।

साम्राज्यवादी वृत्ति :-

औरंगजेब साम्राज्यवादी एवं सत्तालोलुप वृत्ति को लेकर चलनेवाला व्यक्तित्व था। इस एकांकी में वह जीवनभर साम्राज्य की लालसा के लिए तथा अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए किसी भी रिश्ते की परवाह न कर वह उसे हासिल करता है। उसकी अपनी बेटी जीनत को उसका यह कहना कि, " हजारों सतनामियों को कत्ल किया... दारा, शुजा, मुराद को तख्ते-ताऊस का हक नहीं दिया और बाप को सात बरस तक... लंबे सात वर्ष तक..."3 नजरबंद किया था। यह औरंगजेब की सत्तालोलुप एवं साम्राज्यवादी वृत्ति को ही व्यक्त करता है।

बुढ़ापे की बेबसी :-

औरंगजेब की आयु लगभग 79 साल की है। वह बूढ़ा हो चुका है और बुढ़ापे के कारण अपनी साम्राज्यवादी अधूरी इच्छा को लेकर वह परेशान है। वह अपनी बुढ़ापे की बेबसी को व्यक्त करते हुए अपनी बेटी जीनत को कहता है कि, " नहीं, जीनत ! हम कुरान पाक की कसम खाकर कहते हैं कि हम मराठों का नामोनिशान मिटाने में अपनी सारी सल्तनत की बाजी लगा देते, लेकिन... लेकिन अब वह हौसला नहीं रह गया। कमजोरी और बुढ़ापे ने हमें बेबस कर दिया। हमारे बहुत-से काम अधूरे पड़े हैं ! काश, हमारी जिंदगी के दिन अभी खत्म... न होते...!"4 यह उसके बुढ़ापे की बेबसी को व्यक्त करता है।

नृशंसक और निर्दयी वृत्ति :-

औरंगजेब सत्ता प्राप्ति के लिए सब कुछ करनेवाला व्यक्तित्व है, जो मानवता के खिलाफ है। वह सत्ता प्राप्ति के लिए जजिया कर माफ करने के लिए गिडगिडानेवाले हिंदुओं पर अपना हाथी चलता है और उन्हें मार देता है। इतना ही नहीं अपने भाई दारा, शुजा और मुराद की हत्या कर देता है। यहां तक कि अपने पिता शाहजहां और पुत्र कामबख्श को भी बंदी

बना देता है। उसे किसी पर भी दया नहीं आती। यह उसकी नृशंसक और निर्दयी वृत्ति को ही दिखाता है।

क्रूरता एवं शोषक वृत्ति :-

औरंगजेब की शोषक वृत्ति का पता उसके द्वारा लगाये गये जजिया कर से चलता है। उसने हिंदुओं पर जजिया कर लगाया था। जजिया कर एक तरह का टैक्स था, जिसे सिर्फ हिंदुओं को ही देना पड़ता था। जजिया कर से पीड़ित जनता की तस्वीरें उनकी आँखों के सामने आती हैं। उसका अपनी बेटी को यह कहना कि, " हम हाथी पर बैठकर सैरगाह जा रहे हैं। आगे-पीछे हिंदुओं का बेशुमार मजमा है ! वह चीख-चीखकर कह रहे हैं कि आलमपनाह, जजिया माफ कर दीजिए। लेकिन हम माफ कैसे कर सकते हैं ? दकन की लड़ाइयों का खर्च कहां से आएगा ? हम कहते हैं... तुम काफिर हो ? जजिया नहीं हटेगा। वे लोग हमारे रास्ते पर लेट जाते हैं। हमारा हाथी आगे नहीं बढ़ रहा है। हम गुस्से में आकर पीलवान को हुक्म देते हैं- इन कमबख्तों पर हाथी चला दो। हाथी आगे बढ़ता है, और सैकड़ों चीखें हमारे कानों में पड़ती हैं ।... हम हँसकर कहते हैं - काफिरों, तुम्हारी यही सजा है। जजिया माफ नहीं हो सकता... नहीं हो सकता...!"⁵ यह औरंगजेब की क्रूरता और शोषक वृत्ति को ही व्यक्त करता है।

खांसी ज्वर से पीड़ित :-

वह अपने बुढ़ापे में खांसी ज्वर से पीड़ित है। अपनी बेटी को कहता भी है कि यह "खांसी एक लमहे के लिए नहीं रुकती... कोई दवा उसे नहीं रोक सकती, जीनत ! कोई दवा उसे नहीं रोक सकती... यह मौत की आवाज है। इसे कौन रोक सकता है ? "⁶ वह बार-बार खांसता है और कहता है, नहीं बेटी ! यह खांसी की नहीं सल्तनत के उखड़ने की आवाज है। और आज हम आलमगीर भी नहीं रहे गदर को रोकनेवाले। कितनी लड़ाइयां रोकनेवाले हम आज खुद को बहुत कमजोर महसूस कर रहे हैं।

अविश्वास की वृत्ति :-

औरंगजेब का किसी पर भी विश्वास नहीं था। इसीलिए तो वह अपने बेटों द्वारा अपना ही राज्य हथियाने के डर से उनकी हत्या कर देता है। अपने ही बेटे अकबर को बागी और काफिर समझता है। औरंगजेब की अविश्वास की वृत्ति इस एकांकी में हमें तब पता चलती है जब वह हकीम द्वारा दी गई खांसी की दवा न लेकर पहले अपनी बेटी को चखने के लिए कहता है। वह अपनी बेटी से कहता भी है कि जीनत,

"जिंदगी भर हमने अपने ही मकान में आग लगाई है। मरते वक्त अपनी बेटी को भी मौत का जाम चखने देते...? क्या हम हकीम को दवा चखने का हुक्म नहीं दे सकते थे ? लेकिन अब दवा पर हमारा भरोसा नहीं है जीनत !"⁷ यह औरंगजेब की अविश्वास की वृत्ति को व्यक्त करता है।

मराठों की शक्ति से भयभीत :-

जीनत अपने पिता औरंगजेब को धैर्य देती हुई जब कहती है कि हिंदुस्तान और दक्कन आपके इशारे पर बनता और बिगड़ता है। आपके तेवर देखकर अफगानिस्तान भी घुटने टेकता है। राजपूत, जाट, मराठे और सिख आज भी आपसे लोहा नहीं ले सकते। तब विवश औरंगजेब भलेही मराठों का शत्रु हो लेकिन उसका यह कहना कि, " लेकिन शिवाजी ले सकता था। हमारी थोड़ी-सी लापरवाही से वह हाथ से निकल गया। उसकी वजह से जिंदगी-भर परेशान रहा। लेकिन था बहादुर और दिलेर... खैर मराठों की हिम्मत पस्त करना जिंदगी का सबसे बड़ा करिश्मा है - वह हमने किया, बेटी ! वह हमने किया। लेकिन अब... अब हम कमजोर हो गए हैं।"⁸ यह मराठों की शक्ति और उनसे भयभीत औरंगजेब की मानसिकता को दर्शाता है।

पश्चाताप की भावना :-

अपने जीवन भर औरंगजेब ने जो भी बुरा किया या गलत किया है उसका उन्हें पछतावा हो रहा है। उसकी इस पश्चाताप की पीड़ा पर हकीम की दवा भी असर नहीं करती। जिंदगी भर के गुनाह उसे पीड़ा दे रहे हैं। पछतावे के आंसू वह बहा रहा है जिनका कोई लाभ नहीं। इस तकलीफ का जिम्मेदार वह खुद को मानता है। रह रहकर अपने कैद पिता शाहजहां का चेहरा उसे याद आता है। इतना ही नहीं दारा, शुजा, मुराद जिनका उन्होंने कत्ल किया था वह रह रहकर उनके सामने आते हैं। उसका बेटी जीनत को यह कहना कि, " हमने ही लाहौर में दारा की कब्र बनवाई। हमने ही आगरे में मुहम्मद को भेजकर अब्बाजान का महल कैदखाने में तब्दील कराया...!" इतनाही नहीं अपनी पत्नी के प्रेम की याद में बनाया गया ताजमहल भी उसे अब पीड़ादायी नजर आता है। उसका यह कहना कि, मुमताज ! हमारी बेगम ! ताज हमें पत्थरों से नहीं, आंसुओं से बनवाना चाहिए था... काश, यह मुमकिन हो सकता !"⁹ औरंगजेब अपने किए पर शर्मिंदा है। वह स्वयं को गुनाहों में कैद समझता है और अपनी पश्चाताप भरी वाणी में कहता है, "हमें भी कैद में समझो बेटी ! हमारे गुनाहों ने हमें चारों तरफ से घेर रखा है। जमीन की जंजीरों ने

भी हमारे पैर बांध लिए हैं। हम अब इस दुनिया को आंख उठाकर भी नहीं देख सकते। जिस सल्तनत को खून से सींच-सींचकर हमने इतना बड़ा किया है, उसे अगर अब आंसुओं से भी सिंचना चाहें, तो हमें एक पूरी जिंदगी चाहिए। वह हमारे पास कहाँ है ?"10 यह औरंगजेब के गम या पीड़ादायी मन को तथा अपने किये पर पश्चाताप की भावना को व्यक्त करता है।

अकेलेपन का अफसोस :-

कोई भी व्यक्ति अगर अपने परिवार के सदस्यों को, रिश्तेदारों को प्रेम से या मानवता की दृष्टि से नहीं देखता, तो धीरे-धीरे सभी रिश्ते उससे टूटते जाते हैं या दूर होते जाते हैं। औरंगजेब की सत्ता पिपासु वृत्ति ने खुद को अपनों से ही दूर कर दिया। इसी लालसा के कारण उसने अपने पिता को ही कैद नहीं किया अपितु अपने बेटे दारा और शिकोह का भी कत्ल किया। आज उसकी आखिरी रात अर्थात् मृत्यु के समय उसके पास उसकी बेटी जीनत मात्र है। अपने इसी अकेलेपन को व्यक्त करते हुए उसका अपनी बेटी से यह कहना कि, "जीनत, हमारी बेटी ! आज इस आखिरी वक्त में हमारे बिस्तर के नजदीक हमारा एक भी बेटा नहीं है। ऐसे बाप को तुम क्या कहोगी जिसने बादशाहत में खलल पड़ने के वहम से अपने कलेजे के टुकड़ों को सजा देकर हमेशा कैदखाने में रक्खा ? अपने नजदीक आने भी नहीं दिया ? हमारे कैदी बच्चों, तुम बदकिस्मत हो कि आलमगीर तुम्हारा बाप है। तुमने और कोई गुनाह नहीं किया। तुम लोगों का सिर्फ यही गुनाह है कि तुम औरंगजेब के बेटे हो ! आज तुम्हारा बाप मौत के दरवाजे पर पहुंचकर तुम्हें याद कर रहा है !..."11 यह उसके अकेलेपन के अफसोस को व्यक्त करता है।

मानसिक संघर्ष :-

अपने सही और गलत कर्म को लेकर मनुष्य जब अपने मन में सोचता है, तो वही उसका मानसिक संघर्ष कहलाता है, जो पीड़ादायी एवं कष्टदाई होता है। मानसिक संघर्ष और घनीभूत अंतर्द्वंद्व का चित्रण करनेवाली यह एक महत्वपूर्ण एकांकी है। औरंगजेब को उनकी बेटी जीनत जब यह समझाती है कि आलमपनाह इस वक्त यह सोचना बेकार है। रात जियादह बीत रही है तब यह सुनकर औरंगजेब का यह कहना की, "रात जियादह बीत रही है ? आज हमारे लिए भी शायद वही मौत की रात है। लेकिन हमारे सामने कोई ताजमहल नहीं है। हम इस लायक हैं भी नहीं, जीनत ! जिंदगी में हमने कुछ नहीं किया, सिर्फ लड़ाइयां ही लड़ी हैं ! उन्हीं में

हमने फतह हासिल की है, लेकिन आज... आज जिंदगी में हमें शिकस्त ही मिली... भारी शिकस्त। हमने अब्बाजान को कैद नहीं किया, इस आखिरी वक्त में अपने चैनो- सुकून को ही कैद किया।"12 वह अपनी जिंदगी भर किये गये कर्मों पर पश्चात करता है और यही पश्चाताप औरंगजेब के मानसिक संघर्ष को व्यक्त करता है।

बेटी के प्रति प्रेम :-

इस एकांकी में एकांकीकार ने औरंगजेब की क्रूरता, धर्मांधता तथा निष्ठुरता के साथ-साथ अपनी बेटी जीनत के प्रति जो प्रेम दिखलाया है वह पाठक को निश्चित रूप से आकर्षित करता है। नाटक के आखिर में अपनी रोती हुई बेटी को समझाते हुए उसका यह कहना कि, "रोओ मत बेटी ! हम खुश हैं कि तुम हमारे पास हो। आखिरी वक्त में अपनी बेटी की आवाज से हमारी कब्र में फूल बीछ जाएंगे, उसके आंसुओं के कतरों से हमारे गुनाह धुल जाएंगे। हमारी बेटी जीनत !"13 यह उसके अपनी बेटी जीनत के प्रति प्रेम को व्यक्त करता है।

शीर्षक की सार्थकता :-

एकांकीकार रामकुमार वर्मा ने इतिहास के एक प्रसंग और घटना को लेकर औरंगजेब की आखिरी रात का जो वर्णन किया है और उसी रात उसका अपने किए पर पश्चात करना और उसी रात उसकी मृत्यु हो जाना यह घटना अपने आप शीर्षक को सार्थक बना देती है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार औरंगजेब इस्लाम का सच्चा अनुयाई था लेकिन उसके अनेक कार्य उसके उसूलों के खिलाफ थे। उसने इस्लाम की हिदायतों को आखिर तक नहीं समझा। इस्लाम के नाम पर दूसरों को धोखा देता रहा। अपनी साम्राज्यवादी लिप्सा तथा धार्मिक कट्टरता के कारण उसने कितने बेगुनाहों का सिर कलम किया, कितने मासूम को दीवार में चुनवा दिया। अपनी राजगद्दी को बचाए रखने के लिए अपने भाइयों का भी कत्ल किया। यहां तक की अपने पिता को कैद में रखा। नाटककार ने 'औरंगजेब की आखिरी रात' इस एकांकी में औरंगजेब के मानसिक संघर्ष और उसके मन में उठ रहे अंतर्द्वंद्व का चित्रण किया है। इस एकांकी पर चिंतन करने के पश्चात हमारे सामने कुछ निष्कर्ष बिंदु आ जाते हैं। जैसे -

- ऐतिहासिक पात्र, घटना एवं स्थान लेकर नाटककार ने इस एकांकी को जीवंत बनाने का प्रयास किया है।

- मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी दुर्बलता उसकी महत्वाकांक्षा होती है। जैसे - औरंगजेब की साम्राज्यवादी लिप्सा एवं महत्वाकांक्षा।
- नाटककार ने यहां औरंगजेब की क्रूरता एवं निर्दयता की वृत्ति को कुछ घटनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है, जो मनुष्य को मानवता विरोधी कर्मों से सचेत करती है।
- औरंगजेब की एकमात्र अभिलाष थी मराठा साम्राज्य पर विजय पाना, जिसमें उसे सफलता नहीं मिली।
- औरंगजेब भले कितना क्रूरकर्मा हो नाटककार ने उसके पश्चाताप भरे विचारों से उसके मन को तरल बनाने का प्रयास किया है।
- यहां औरंगजेब का अपनी बेटी जीनत के प्रति प्रेम पाठक को आकर्षित करता है।

कुल मिलाकर 'औरंगजेब की आखिरी रात' यह एक ऐतिहासिक एकांकी होकर, इतिहास की घटना, प्रसंग और पात्र के इस कथावस्तु को जीवंत बनते हैं। छोटे-छोटे अर्थपूर्ण व प्रभावी संवादों से यह एकांकी पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

संदर्भ सूची :-

- 1) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 52
- 2) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 58
- 3) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 59
- 4) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 58
- 5) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 72
- 6) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 56
- 7) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 73
- 8) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 57
- 9) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 60
- 10) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 70
- 11) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 69
- 12) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 60
- 13) संपा. डॉ. सुजीतसिंह परिहार - गद्य तरंग - पृ. 74